कुधर्म का स्वरुप

www.JainKosh.org

fppt.com

रागादि भावहिंसा समेत, दर्वित त्रस थावर मरण खेत॥११॥
जे क्रिया तिन्हैं जानहु कुधर्म, तिन सरधै जीव लहै अशर्म ।

- समेत= सहित
- दर्वित = द्रव्यहिंसा
- मरण खेत= मरण का स्थान
- तिन्हैं= उन्हें
- जानहु= जानना चाहिए
- कुधर्म= मिथ्याधर्म
- तिन= उनकी
- सरधै= श्रद्धा करने से
- **लहै अशर्म= दुःख पाते हैं**

www.JainKosh.org
fppt.com

रागादि भावहिंसा समेत, दर्वित त्रस थावर मरण खेत॥११॥
जे क्रिया तिन्हैं जानहु कुधर्म, तिन सरधै जीव लहै अशर्म ।

भावहिंसा	• मिथ्यात्व तथा रागादिरूप भाव
द्रव्यहिंसा	• त्रस तथा स्थावर जीवों के घातरूप
कुधर्म	• भावहिंसा और द्रव्यहिंसा रूप क्रियाओं को धर्म मानना
कुधर्म श्रद्धा से जीव	• दुःख प्राप्त करता है ।

www.JainKosh.org
fppt.com

कुधर्म

द्रव्य-भाव हिंसा उत्पन्न होवे

विषय-कषायों की वृद्धि होवे

वहाँ धर्म मानना कुधर्म है

www.JainKosh.org

fppt.com

कुधर्म

हिंसा	• यज्ञादिक क्रिया, बड़े जीवों का घात,
विषय	• इन्द्रियों के विषय पुष्ट करे,
कषाय	• 1) अत्यधिक रौद्र परिणाम, • 2) तीव्र लोभ से औरों का बुरा करके अपना प्रयोजन साधना (बलि आदि)

www.JainKosh.org

fppt.com

तीर्थ स्नान = कुधर्म

www.JainKosh.org

fppt.com

दान में कुधर्म कैसे?

संक्रांति, चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण आदि में दान	• फल कुछ नहीं हुआ
बुरे ग्रहों के लिए दान	• भय, लोभ भावों से दिया दान, दान नहीं है
लोभी पुरुषों (ब्राह्मण आदिक) को दान	• वे ठगते हैं, • दान का misuse करते हैं। • दान से पाप कार्य करते हैं।
दान में सोना, हाथी, घोड़ा तिल आदि देना	• इनसे हिंसादिक पाप पैदा होते हैं • मान-लोभ बढ़ते हैं
रतिदान	• कुशील पाप है

www.JainKosh.org

fppt.com

व्रतादि में कुधर्म कैसे?

नवरात्र, रोजा, ईद, उपवास

अन्न का त्याग व कंदमूल का सेवन

दिन में भोजन त्याग, रात्रि में भोजन

व्रत रखना व श्रृंगार, कुतूहल, जुआं आदि करना

www.JainKosh.org

fppt.com

भक्ति में कुधर्म कैसे?

बलि चढ़ाना

56 भोग लगाना

भांग आदि पीना

मटकी फोड़ना

भंडारा करना

प्रतिमा विसर्जन करना

मूर्ति श्रृंगार करना

www.JainKosh.org

fppt.com

तप में कुधर्म कैसे?

www.JainKosh.org

fppt.com

योग में कुधर्म कैसे?

पवन-साधन से धर्म मानना

नेती, धोती में जल की हिंसा

इसमें कुछ चमत्कार हो, तो मानादिक बढ़ाना

www.JainKosh.org

fppt.com

अपघात (Suicide) में धर्म मानना

दु:ख सहन न होने से अपघात करना	परलोक में इष्ट की इच्छा से	अपनी पूजा बढ़ाने के लिए
सती होना	हिमालय में गलना	आमरण-अनशन आदि

www.JainKosh.org

fppt.com

जैनधर्म में भी कुधर्म की प्रवृत्ति

धर्म पर्वों में

- अनेक श्रृंगार करना
- इष्ट भोजनादि करना
- खेलकूद करना (नृत्य आदि)
- जुआ (तंबोला)
- Fashion Show, हास्य कवि सम्मेलन आदि करवाना
- भगवान को होली खिलाना
- कषाय बढ़ाने के कार्य (देखना-दिखाना)

www.JainKosh.org

fppt.com

जैनधर्म में भी कुधर्म की प्रवृत्ति

पूजनादि कार्यों में

- रात्रि में दीपक से
- अनंतकायादिक संग्रह से
- अयत्नाचार प्रवृत्ति से

पाप बहुत उत्पन्न करते हैं व

भक्ति, स्तुतिरूप भाव अल्प या नहीं करते हैं

www.JainKosh.org

fppt.com

जैनधर्म में भी कुधर्म की प्रवृत्ति

जिनमंदिर में

- कुकथा करना
- शयन करना (Sleeping)
- बाग-बगीचा बनाकर विषयों का पोषण करना

www.JainKosh.org

fppt.com

कुधर्म सेवन से मिथ्यात्व क्यों ?

रागादि भाव छोड़ने का नाम धर्म है। तो रागादि भाव बढ़ाकर धर्म मानना धर्म का विपरीत श्रद्धान हुआ, अत: मिथ्यात्व हुआ।

जिन-आज्ञा (जिनेन्द्र देव के वचन) से प्रतिकूल हुआ, अत: मिथ्या श्रद्धान हुआ।

रागादि स्वयं पापरूप हैं, उन्हें धर्म मानना रागादि का झूठा श्रद्धान हुआ।

अत: कुधर्म सेवन मिथ्यात्व भाव है।

www.JainKosh.org

fppt.com

कुदेवादि के सेवन क्यों अहितकर ?

इनके सेवन से हुआ मिथ्यात्व भाव हिंसादिक से भी बड़ा पाप है।

इसके फल में निगोद, नरकादि दशा होती है।

सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति महादुर्लभ हो जाती है।

www.JainKosh.org

fppt.com

अत: किंचित् मात्र लोभ से या भय से या लज्जा से या अन्य कोई कारण से कुदेवादि का सेवन छोड़ो।

www.JainKosh.org

fppt.com

याकूँ गृहीत मिथ्यात्व जान, अब सुन गृहीत जो है अज्ञान॥१२॥

- याकूँ= इस कुगुरु, कुदेव और कुधर्म का श्रद्धान करने को
- गृहीत मिथ्यात्व= गृहीत मिथ्यादर्शन जानना, अब
- जो है= जिसे कहा जाता है
- अज्ञान= मिथ्याज्ञान

www.JainKosh.org

fppt.com

याकूँ गृहीत मिथ्यात्व जान, अब सुन गृहीत जो है अज्ञान॥१२॥

इस प्रकार मिथ्या गुरु, देव और धर्म की श्रद्धा करना गृहीत मिथ्यादर्शन कहलाता है,

अब गृहीत मिथ्याज्ञान का वर्णन किया जाता है

fppt.com

गृहीत मिथ्याज्ञान

www.JainKosh.org

fppt.com

एकान्तवाद-दूषित समस्त, विषयादिक पोषक अप्रशस्त;
रागी कुमतनिकृत श्रुताभ्यास, सो है कुबोध बहु देन त्रास॥१३॥

- विषयादिक= पाँच इन्द्रियों के विषय आदि की
- पोषक= पुष्टि करनेवाले
- रागी कुमतनिकृत= रागी कुमति आदि के रचे हुए
- अप्रशस्त= मिथ्या
- श्रुत= शास्त्रों को
- अभ्यास= पढ़ना-पढ़ाना, सुनना और सुनाना
- सो= वह
- कुबोध= मिथ्याज्ञान
- बहु= बहुत
- त्रास= दुःख को

www.JainKosh.org

fppt.com

एकान्तवाद-दूषित समस्त, विषयादिक पोषक अप्रशस्त;
रागी कुमतनिकृत श्रुताभ्यास, सो है कुबोध बहु देन त्रास॥१३॥

गृहीत मिथ्याज्ञान

एकान्तवाद से दूषित,

पाँच इन्द्रियों के विषयों की पुष्टी करने वाले

रागी कुमति आदि के रचे हुये

समस्त मिथ्या शास्त्रों को पढ़ना- पढ़ाना, सुनना और सुनाना

fppt.com

एकान्तवादी कुशास्त्र

वस्तु के एक ही धर्म को मानना एकान्तवाद कहलाता है

ये बतातें हैं:

जगत में सर्वथा नित्य, एक, अद्वैत और सर्वव्यापक ब्रह्ममात्र वस्तु है, अन्य कोई पदार्थ नहीं है

वस्तु को सर्वथा क्षणिक-अनित्य बतलायें

गुण-गुणी सर्वथा भिन्न हैं, किसी गुण के संयोग से वस्तु है

जगत का कोई कर्ता-हर्ता तथा नियंता है

www.JainKosh.org

fppt.com

पाँच इन्द्रिय विषयों की पुष्टी करने वाले जैसे : उपन्यास, गृहशोभा, Newspaper

fppt.com

टी वी देखने से
गृहीत मिथ्याज्ञान का
पोषण होता है

www.JainKosh.org

fppt.com

कैसे?

टी वी में बताया जाता है–

भगवान कर्त्ता होता है

पुण्य से ही सुख होता है

परिग्रह होना ही अच्छा होता है

अनेक धर्मों के भगवानों की कथायें आती हैं

जिससे गृहीत मिथ्याज्ञान का ही पोषण होता है

fppt.com

जो स्वंय रागी-द्वेषी हैं, विपरीत मान्यता वाला है
वह वीतरागता का पोषण करने वाले शास्त्रों की रचना नहीं कर सकता है

www.JainKosh.org

fppt.com

सच्चे शास्त्र

चिह्न

अनेकान्त

अनेक + अन्त

स्याद्वाद

स्याद् + वाद

www.JainKosh.org

fppt.com

अनेकान्त:

वस्तु को निपजाने वाली परस्पर विरुद्ध 2 शक्तियों का एक साथ प्रकाशित होना अनेकान्त कहलाता है

www.JainKosh.org

fppt.com

स्याद्वाद

वस्तु का किसी अपेक्षा से कथन करना स्याद्वाद कहलाता है

www.JainKosh.org

fppt.com

सच्चे शास्त्र

लक्षण :

- आप्त के द्वारा कहा गया
- वादी प्रतिवादी के द्वारा उल्लंघित न हो
- प्रत्यक्ष और अनुमान द्वारा बाधित न हो
- तत्त्व का कथन करने वालें हो
- सब जीवों को हितरुप हो
- मिथ्यामार्ग का निषेध करने वाला हो

www.JainKosh.org

fppt.com

True or False

- ✓जो ग्रंथ संस्कृत में लिखा हो, वह शास्त्र है ।
- ✓बहुत पुराने (like 1000 years old) ग्रंथ ही शास्त्र है ।
- ✓जो ग्रंथ आचार्य ने लिखा हो, वह ही शास्त्र है ।
- ✓बहुत अधिक गाथा वाला ग्रन्थ (lot of pages) ही शास्त्र है ।
- ✓जो स्याद्वाद शैली से वीतरागता का पोषण करे, वह ही शास्त्र है ।

www.JainKosh.org

fppt.com

क्या रागादि के पोषक शास्त्रों को पढ़ना मात्र, गृहीत मिथ्याज्ञान है?

रागादि के पोषक शास्त्रों को पढ़ना मात्र, गृहीत मिथ्याज्ञान नहीं है,

बल्कि उन्हें वास्तविक सुखी होने का उपाय बतानेवाला मानकर पढ़ना, पढ़कर प्रसन्न होना गृहीत मिथ्याज्ञान है

www.JainKosh.org

fppt.com

गृहीत मिथ्याचारित्र

www.JainKosh.org

fppt.com

जो ख्याति लाभ पूजादि चाह, धरि करन विविध विध देहदाह ।
आतम अनात्म के ज्ञानहीन, जे जे करनी तन करन छीन॥१४॥

- ख्याति= प्रसिद्धि
- पूजादि= मान्यता और आदर-सन्मान आदि की चाह
- धरि= इच्छा करके
- देहदाह= शरीर को कष्ट देनेवाली
- आतम अनात्म के= आत्मा और परवस्तुओं के
- विविध विध= अनेक प्रकार की
- करनी= क्रियाएँ
- करन= करनेवाली
- छीन= क्षीण
- ज्ञानहीन= भेदज्ञान से रहित

www.JainKosh.org
fppt.com

जो ख्याति लाभ पूजादि चाह, धरि करन विविध विध देहदाह ।
आतम अनात्म के ज्ञानहीन, जे जे करनी तन करन छीन॥१४॥

जो प्रसिद्धी, लाभ तथा मान-सन्मान आदि की इच्छा करके

शरीर को कष्ट देने वाली

आत्मा और पर-वस्तुओं के भेदज्ञान से रहित

अनेक प्रकार की जो-जो क्रियायें हैं

वे सब मिथ्याचारित्र हैं

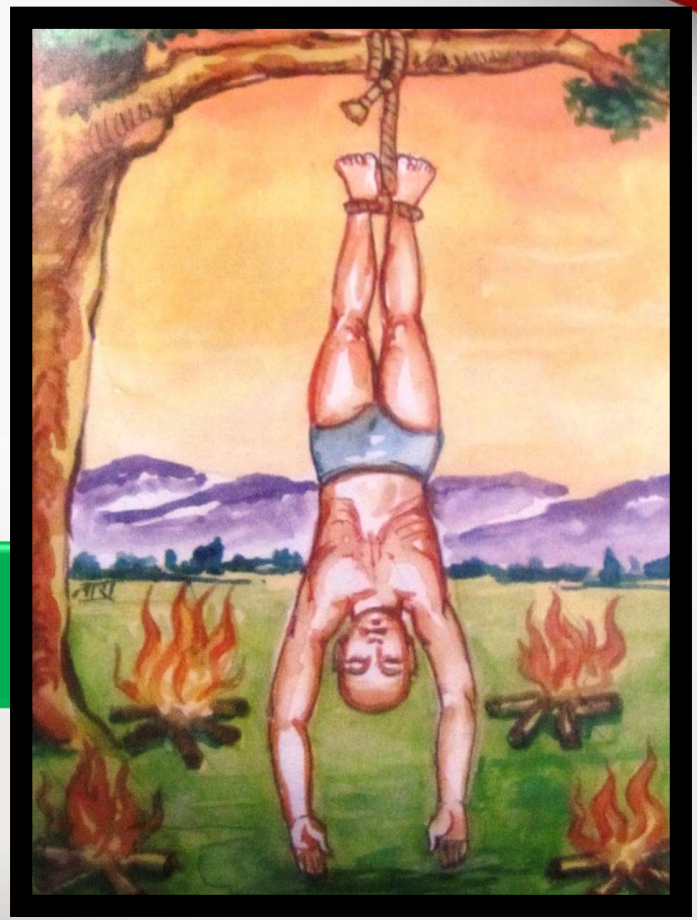

www.JainKosh.org

fppt.com

अर्थात्

स्व-पर के सम्यक्श्रद्धान से रहित जो कुछ भी बाह्य आचरण है वह

- अनादिकालीन मिथ्यात्व का पोषक होने से और
- मानादि कषाय का पोषक होने से

गृहीत मिथ्याचारित्र है

www.JainKosh.org

fppt.com

अज्ञानी भले शरीर को कृश कर ले, किन्तु कषायों की कृशता नहीं हो सकती

www.JainKosh.org

fppt.com

संयमी की लोक में पूजा होती है अतः संयम धारण करना चाहिये; क्या यह बात सही है?

www.JainKosh.org

fppt.com

मान सम्मान के लिये संयम
धारण करना सही नही है,
बल्कि सुख प्राप्ति के लिये
संयम धारण करना चाहिये

www.JainKosh.org

fppt.com

वास्तविक पूजा, प्रतिष्ठा, ख्याति आदि तो अरहंत - सिद्ध पद प्रगट होने पर ही होता है

जो कि परिपूर्ण स्वरूप स्थिरतारूप संयम से ही होती है

जिसके लिये पूज्यता का विकल्प भी त्यागना होता है

www.JainKosh.org

fppt.com

गृहीत अगृहीत मिथ्यात्व में अंतर

	अगृहीत मिथ्यात्व	गृहीत मिथ्यात्व
1	इसमें जीवादि प्रयोजनभूत तत्त्वों संबंधी विपरीत मान्यता मुख्य रहती है	इसमें देव, गुरु, शास्त्र संबंधी विपरीत मान्यता मुख्य रहती है
2	यह बिना सिखाये अनादि से चला आ रहा है	यह सैनी पंचेन्द्रिय जीव में ही नया सीखने से प्रगट होता है
3	यह ४ गतियों में पाया जाता है	इसका प्रारंभ अज्ञानतावश मुख्यतया मनुष्यगति में ही होता है, यहाँ के संस्कारवश तिर्यंच और देवगति में भी पाया जा सकता है
4	इसके नष्ट हुये बिना जीव कभी भी सुखी नहीं हो सकता है	इसके नष्ट होने पर भी जीव अगृहीत मिथ्यात्व से दुखी ही रहता है

www.JainKosh.org

fppt.com

गृहीत अगृहीत मिथ्यात्व में अंतर

	अगृहीत मिथ्यात्व	गृहीत मिथ्यात्व
5	यह अकेला भी बना रह सकता है	इस मिथ्यात्वी के नियम से अगृहीत मिथ्यात्व होता ही है
6	यह बिना परोपदेश के स्वयं के विपरीत श्रद्धान से ही होता है	यह कुदेव, कुगुरु, कुशास्त्र के निमित्त से पलता है
7	इसके नष्ट हो जाने पर बाह्य में स्थूलरूप से कोई विशेष अंतर दिखाई नहीं देता है	इसके छूटने की पहचान बाह्य संयोग-व्यवहारादि से हो जाती है
8	इसके स्वरूप को समझने का तथा इसे नष्ट करने का उपाय मुख्यतया द्रव्यानुयोग और करणानुयोग की शैली द्वारा समझाया जाता है	इसके स्वरूप को समझने का तथा इसे नष्ट करने का उपाय मुख्यतया चरणानुयोग और प्रथमानुयोग की शैली द्वारा समझाया जाता है

www.JainKosh.org

fppt.com

मिथ्याचारित्र के त्याग का तथा आत्महित में लगने का उपदेश

www.JainKosh.org

fppt.com

ते सब मिथ्याचारित्र त्याग, अब आतम के हित पंथ लाग ।
जगजाल-भ्रमण को देहु त्याग,अब दौलत! निज आतम सुपाग॥१५॥

- ते= उस
- सब= समस्त
- त्याग= छोड़कर
- हित= कल्याण के
- पंथ= मार्ग में
- लाग= लग जाओ,
- जगजाल= संसाररूपी जाल में
- भ्रमण को= भटकना
- देहु त्याग= छोड़ दो,
- निज आतम= अपने आत्मा में
- सुपाग= भलीभाँति लीन हो जाओ

www.JainKosh.org
fppt.com

ते सब मिथ्याचारित्र त्याग, अब आतम के हित पंथ लाग ।
जगजाल-भ्रमण को देहु त्याग,अब दौलत! निज आतम सुपाग॥१५॥

उस सब मिथ्याचारित्र को छोड़कर

अब आत्मा के कल्याण के मार्ग में लग जाओ,

संसाररूपी जाल में भटकना छोड़ दो।

हे दौलतराम! अपने आत्मा में अब भलीभाँति लीन हो जाओ

www.JainKosh.org

fppt.com

मिथ्यात्व को छोड़े
बिना सुखी नहीं हुआ
जा सकता अत: हमें
गृहीत-अगृहीत मिथ्यात्व
छोड़कर मोक्षमार्ग में
लगना चाहिये

www.JainKosh.org

fppt.com

- Reference : श्री मोक्षमार्ग प्रकाशक जी

- Presentation created by : Smt. Sarika Vikas Chhabra
- Get Presentation online from: www.jainkosh.org
- For comments / feedback / suggestions, please contact

- sarikam.j@gmail.com

fppt.com